

# बजरंग दल पर प्रतिबंध, विनाशकाले विपरीत बुद्धि : बोधराज सीकरी

ओटीबड़ीबात

आज हरे के दिन 2004 से चलने से  
संविधान को भारत का अंग  
माना गया



सुबह 7 बजे  
शुक्रवार 10  
एडिशन  
दैनिक  
भास्कर पर

danikbaskarup.com

## दैनिक भास्कर

पेज का विवरण/व्यय आरक्षण

प्रेस | कॉ-02, 30-35 गिरी, 55 मी 2022 | फोन: 0824 250 8000

झांसी, गोंडडा, राखनऊ और देहरादून से प्रकाशित



## बजरंग दल पर प्रतिबंध को लेकर बोधराज सीकरी का कांग्रेस पर निशाना बोले कर्नाटक में कांग्रेस की विनाश काले विपरीत बुद्धि

भास्कर ब्यूरो

गुरुग्राम। कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस द्वारा बजरंगदल पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा को लेकर गुरुग्राम भाजपा नेता व जानेमाने समाजसेवी बोधराज सीकरी ने कांग्रेस पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मयार्दा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत



योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर।

एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं



कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? श्री सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

# दैनिक ट्रिब्यून

## बजरंग दल पर प्रतिबंध, विनाशकाले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

गुरुग्राम, 5 अप्रैल (हप्र)

कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ़.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। भाजपा नेता और हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने आज यह बात कही और कहा कि एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था



रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? उन्होंने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफ़आई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पीएफ़आई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

---

# राष्ट्रीय सहारा

राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण

## धर्मांतरण व घुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज

गुरुग्राम (एसएनबी)। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं।

राष्ट्रीय दैनिक ई-पेपर

# भारत सारथी

## बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

भारत सारथी

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में खर्च करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भागवत में आस्था रखते हैं यानि आर्सेनिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ एक ओर 15% लोग मर्दाना पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अलग भक्त अनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिष्ठित योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सभा को अती पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग ब्राह्मणों पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक और छतीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक को कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल को पी.एफ. आई.



से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगअलगकारियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका

जगम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्सवकित्त दिए। बजरंग दल धर्मोत्तरण की रोकता है और सुसंप्रतिषों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य



है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही मनुजतन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घुसा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

# दैनिक मेवात

## बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

- दैनिक मेवात संवाददाता  
दुर्गामा कविश्वर द्वारा  
दल पर प्रतिबंध लगाना और  
उसको पी.एफ.आई. से तुलना  
करना उनकी सरकार का अत्यन्त  
उदाहरण है एक असीमित एजेन्सी  
द्वारा दल को नहीं खारजना गया,  
विशेष यह कि यह कि २२ वर्ष हिंदू  
धरमन में आस्था रखते हैं यानि  
अधिकांश हैं। ४९२ लोग सिव जी  
को उर मारते हैं, जहां एक ओर  
१०२ लोग मर्दाना दुर्गमोत्तम मम-  
धरु है, जहाँ दुर्गमों और राम जी  
के अन्तर्गत मरु दुर्गमन को के ३२२  
अदुर्गमो है। इन्को उन्मर अलग-  
अलग प्रतिगत योगीयत्र श्री दुर्गम  
और कालि अन्तर्गत भी में आस्था  
रखते हैं। जैसे कालि और यत्र को  
अन्ती पर विश्वास है, जहाँ कालि  
के कर्मकर्ता को खारजकर्ता पर  
निष्क्रम है। कई लोग अदुर्गमो पर  
विश्वास करते हैं और इन



बजरंगदली पर। एक ओर  
उन्तीयत्रु के मुल्यमो के अदुर्गम  
को खोजते हैं, जहाँ उन्हें अन्तर्गत  
से कोई सम्मना नहीं है जहाँ  
कर्नाटक को कविश्वर को फिर नया  
छुता है। यह नया विदुष्यना है।  
इस प्रकार को दुर्गम बजरंग दल  
को पी.एफ. आई. से करवा निम्न  
अन्त को मोच और मुताह का जोता  
जागता उदाहरण है। जहाँ

पी.एफ.आई. बहरपेयी विचारगत  
और अन्तर्गतसिधी का सम्मन  
है नहीं बजरंग दल जोहो को  
प्रक्रिया में लग्य है।

बजरंग दल को स्थान ३-  
१०-१९९४ में अन्तीयत्र में हुं की  
सिम्बल काय शीषावत को रख  
के तिरु ब। नार में जन्मी अन्तर्गत  
को देखते हुं विश्व हिंदू परिषद ने  
उन्को बर्त और उन्तर्गतसिदि।

बजरंग दल धर्मनग को वेकता  
है और पूरपेयिमी को वेकता है।  
सकरात्मक नीय के दल को  
प्रतिषेधा करवा अन्तीयत्रु करण  
है। तुलना के नरीने अन्तीय दल अन्तर्गत  
का परिषद सिद्ध कर दें। इस अन्तर्गत  
एक अन्तर्गत के अन्तर्गत २२ लख  
कर्मकर्ता और २२ लख बजरंग दल  
के अन्तर्गत है उनके तिरु ब। अन्तीयत्रु  
है। अन्तीय, अन्तीय दली को कर्नाटक  
के तुलना में मजा खारज और इन  
का इन्तर्गत ऐसे लोगो को दिना जाए।  
बोधराज सीकरी ने इन भूे मामले  
पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुं कहा  
कि जिन देश का अन्तर्गत ही अन्तर्गत  
संस्कृति है जहाँ अन्तर्गत कोई पार्टी  
अन्तर्गतों के नाम से गुण को,  
अन्तर्गत भोलापण में अन्तर्गतदली  
सोल्ने जन्ती को ताने में बरु करने  
का निर्णय ले। जो यह देश के तिरु  
दुर्गमोत्तमो है ऐसी मोच हो इन कर्ते  
सर्वो में निरु करे है।

## बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी



ह्यूमन इंडिया, न्यूदिल्ली

मुमुक्षुस्यः । करिष्ये इत्यं बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाया और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करके उनकी हत्या का ज्वलन उदाहरण है । एक अमेरिकन एग्जैम्पल इत्यं दल ही में सर्वे आधुनिक युवा, विद्वाने यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू आस्था में अलग रखे हैं यदि अवैतनिक हैं । 45% लोग शिव को ही पूज्य मानते हैं, जबकि एक और 15% लोग सर्वोच्च तुलनात्मक रूप-पक्ष हैं, यहाँ तुलना और रूप को अलग भक्त हनुमान को के 25% अनुयायी हैं । इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिबंध धर्मोपदेश को मुक्त और उचित रूपका भी में अलग रखते हैं । वेरो करिष्ये और

सर्व को सभी पर विचारण है, यहाँ बजरंग के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विचारण है । कई लोग अनुयायी पर विचारण करते हैं और हम बजरंगबली पर एक और उदाहरण के मुकुटमाली के अनुयायी को करिष्ये से है, यहाँ उन्हीं बजरंगदल से कोई सम्बन्ध नहीं है यहाँ कर्नाटक को करिष्ये को फिर क्या खतरा है । यह क्या विचारण है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल को पी.एफ. आई. से करण निम्न स्तर को शोध और हत्या का भीषण उदाहरण है । यहाँ पी.एफ.आई. काटकरभी विचारण और अलग-अलगधर्मियों का संघर्ष है यहाँ बजरंग दल को दूने की प्रतिबंध में लाया है ।



बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका कला शोधकर्ता की रस के लिए था । बाद में उनकी अलग को देखने हुए विरम हिंदू परिषद ने उनकी कई और उदाहरणिक रूप । बजरंग दल धर्मोपदेश को रोका है और मुमुक्षुस्य को रोका है । साधारणका शोध के दल को प्रतिबंधित करण अज्ञानमय कार्य है । तुलना के नतीजे उनकी इस हत्या का परिणाम सिद्ध करे गि । इस समय एक अनुयायी के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख

बजरंग दल के सदस्य हैं । उनके लिए एक सर्वोपरी है । अतः, सभी लोगों को कर्नाटक के मुमुक्षुस्य में यथा सम्बन्ध और दल का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाय । धर्मोपदेश कोभी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिबंधित देने हुए बाद कि जिस देश का अन्धकार ही समाप्त संस्कृति है यहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के रूप से मुक्त करे, अपने धर्मोपदेश में बजरंगबली कोलने यहाँ को लाने में बंद करने का निर्णय ले । जो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है । ऐसी शोध ही हम बड़े सभी में निरा करते हैं ।

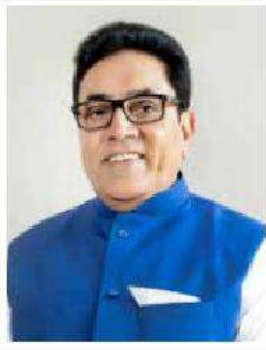
# गुड़गांव दुडे

## बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग

■ विनाश काले  
विपरीत बुद्धि : बोध  
राज सीकरी।

गुड़गांव दुडे, गुरुग्राम

कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और इसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग सूर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार



अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई

लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर

बया खूतरा है। यह क्या विडम्बना है ?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य

है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घुणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

# ओपन सर्च

बजरंग दल पर प्रतिबंध, कर्नाटक की सियासी जंग

## विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

ओपन सर्च/ विशेष संवाददाता  
सतबीर भारद्वाज

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है?



इस प्रकार की तुलना बजरंग दल को पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का ज्वला जगता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे



उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मन्ना चखाएँ और छार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से धुणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।



# अमर भारती

करण

एक उम्मीद

## बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग

### विनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी

**अमर भारती संवाददाता**  
गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ एक ओर 15% लोग मयार्दा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगवली पर



विश्वास है। कई लोग बाहुवली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगवली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहाँ कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना

अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगवली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगवली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

# बुलंद खोज

सम्पादक-संजय सार्थक

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र

## बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी

गुरुग्राम, बुलंद खोज / लोकेश कुमार। भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य, हरियाणा राज्य सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष व पंजाबी बिरादरी महसंगठन के अध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कांग्रेस द्वारा बजरंग दल के प्रतिबंध लगाए जाने के बयान पर कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं।

45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना



बोधराज सीकरी

बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। उन्होंने कहा कि बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विध्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और धुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हर का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

# हरियाणा की आवाज

सबसे तेज... सबसे आगे

Postal No. : P/BWN/47/2023-2025  
E-mail : haryanakiaawaz@gmail.com  
www.haryanakiaawaz.in

भिवानी, चंडीगढ़, हिसार से एक साथ प्रकाशित

राष्ट्रवादी हिन्दी दैनिक

वर्ष : 14 अंक : 317

मिठानी रविवार 06 मई 2023

मूल्य : 3.00 रुपये

8:33 AM ✓

कुल पृष्ठ : 8

## धर्मांतरण व घुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम(राकेश)। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज ड्वी कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मां में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंग बली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर



छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहां उन्हें बजरंग दल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है।

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहां पीएफआई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है, वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी, जिसका काम शोभा यात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे!

8:33 AM ✓



नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

# पायनियर

## धर्मांतरण व घुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज सीकरी

सर्वे में सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में रखते हैं आस्था



बोधराज सीकरी।

गुरुग्राम। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं।

सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मां में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर

विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंग बली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहां उन्हें बजरंग दल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है। इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहां पीएफआई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है, वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।



# जगत क्रान्ति



वर्ष : 44 अंक : 124  
जीन्ड  
संक्रियर, 6 मई, 2023  
एड 12 | मूल्य ₹ 2

## कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा हताशा : बोध राज सीकरी

जगत क्रान्ति ► एमके अरोड़ा

**गुरुग्राम :** भाजपा प्रदेश कार्य समिति के सदस्य, हरियाणा राज्य सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष व पंजाबी बिरादरी महासंगठन के अध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कांग्रेस द्वारा बजरंग दल के प्रतिबंध लगाए जाने के बयान पर कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं।



इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

# ज्योति दर्पण

हिन्दी दैनिक

Website : [www.jyotidarpan.com](http://www.jyotidarpan.com)

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग

## विनाश काले विपरीत बुद्धि- बोध राज सीकरी

**गुरुग्राम।** कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी इलाका का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिष्ठित योगीश्वर श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और समा को अली पर विश्वास है, वही भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगदली पर विश्वास है। कई लोग बाहुदली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगदली पर। एक ओर हत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की

कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न



स्तर की सोच और हठधरा का जीत जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के

लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए जिस हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मतरंग को रोकता है और धुसपैठियों को रोकता है। स्वकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना असोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हठधरा का परिणाम सिद्ध कर देगा। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाई और हर का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। मोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगदली के नाम से घुणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगदली कोलने वक्तों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

## बजरंग दल पर प्रतिबंध – कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि – बोध राज सीकरी



गुरुग्राम ( एनसीआर टाइम ) गुरुग्राम कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97: हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45: लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15: लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35: अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या

विडम्बना है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

नये भारत का अखबार



# गुड़गांव मेल

DAVP, Northern Rly., DIPR Haryana के विद्यार्थियों के लिए अर्धकृत

हरियाणा के सभी जिलों, चण्डीगढ़ और दिल्ली में प्रसारित

## बजरंग दल पर प्रतिबंध – कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

ब्यूरो/गुड़गांव मेल

गुड़गांव, 5 मई। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आर्सेतिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरस्कर्ता राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगिराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली



पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक को कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना

है ?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अत्याचारीयों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उन्नतदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य

है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घुणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।



पुनर्गठन

## बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग .....विनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी



गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मां में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई ओर उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मतिरण को टोकता है और घुलपैठियों को टोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र, सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।





**Viral Sach : Bodhraj Sikri – कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं।**

45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिभात योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मी में आस्था रखते हैं।

जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ. आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है।

सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताते में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुःखपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।